



PANDIT (DR.) RITWIK SANYAL

Pandit (Dr.) Ritwik Sanyal is a world renowned Indian Classical Vocal Maestro and senior most exponent of the Dāgar Gharānā of Dhrupad, the profound and ancient classical music tradition of India. Over past 45 years, he has immensely contributed to India's classical music culture as Singer, Composer, Scholar, Teacher, Philosopher and Writer.

2. Born on 12th April, 1953, Pandit (Dr.) Sanyal's musical journey started at a tender age with his mother Smt Ranu Sanyal, an accomplished writer and vocalist. In 1963, the rigorous training of Dhrupad started with the two greatest Dhrupad exponents of recent times Ustad Zia Mohiuddin Dagar and Ustad Zia Fariduddin Dagar. Academic studies of philosophy nurtured his mind and soul from his illustrious father- a philosopher and mathematician Professor Batuk Sanyal of IIT Mumbai. After completing his post-graduation in Philosophy from Mumbai University, he was sent to Varanasi by his Guru to complete his Masters in Vocal Music from Banaras Hindu University, from where he also completed his Ph.D. research under eminent musicologist Prof. Premrata Sharma.

3. Pandit (Dr.) Sanyal was a Professor and also served as Head of the Department of Vocal Music and Dean, Faculty of Performing Arts, Banaras Hindu University. He has taught thousands of students during his carrier of 37 years in academics and guided 27 scholars to Ph.D degree. A huge number of disciples under his mentorship are nurturing the art of Dhrupad, Khyal and Instrumental Music across the globe. His 30 prominent disciples are already notable performers today. He has authored three well-known books- 'Philosophy of Music', 'Dhrupad: Tradition and Performance in Indian Music' from UK and 'Dhrupad Pancasika'. His treatise on Dhrupad co-authored by Dr. Richard Widdess of University of London is an excellent overview of Dhrupad tradition and performance.

4. Pandit (Dr.) Sanyal has assimilated the Dāgar tradition of Dhrupad and evolved a distinctive style of his own in his renditions of Dhrupad, voice culture and innovative pedagogy, both traditional and institutional. He also had the privilege to perform with his Guru Ustad Z. F. Dagar pioneering Dhrupad on many new platforms in India and abroad. He has also infused new dimension to Dhrupad performances incorporating Sanskrit verses, modern poetry, Western and Indian instruments, choirs and fusion renditions. He has created new Ragas- Shrutivardhini, Deepranjani, Gopini and Nagesh Todi. He Continues to compose Dhrupad under his pen name 'Shrutigyan'. He is a 'Top' Grade artist of All India Radio and Doordarshan and appeared numerous times in National Programs of Music, BBC and other International channels with several albums in India and abroad.

5. Pandit (Dr.) Sanyal has been honoured with many awards which include the prestigious Kendriya Sangeet Natak Akademi Award 2013, Uttar Pradesh Sangeet Natak Akademi Award 2002, Uttar Pradesh Ratna 2016, Swati Tirunal Samman 1995 and Lifetime Achievement Honor by Dhrupad Mela Varanasi 2010. He is a distinguished member of several Indian and International Institutions advising on cultural policy, education curricula and reform. He continues to impart the wisdom of Dhrupad to the talented future generation.



पण्डित (डॉ.) ऋत्तिक सान्याल

पण्डित (डॉ.) ऋत्तिक सान्याल भारतीय शास्त्रीय गायन के विश्वविख्यात पंडित और भारत की गहन और प्राचीन शास्त्रीय संगीत परंपरा ध्रुपद के डागर घराने के वरिष्ठतम कलाकार हैं। पिछले 45 वर्षों में, उन्होंने गायक, संगीतकार, विद्वान, शिक्षक, दार्शनिक और लेखक के रूप में भारत की शास्त्रीय संगीत संस्कृति में भरपूर योगदान दिया है।

2. 12 अप्रैल, 1953 को जन्मे, पण्डित (डॉ.) सान्याल की संगीत यात्रा कुशल लेखिका और गायिका उनकी मां श्रीमती रानू सान्याल के संरक्षण में कम आयु में शुरू हुई। 1963 में ध्रुपद में उनकी कठोर शिक्षा हाल के समय के दो महानतम ध्रुपद गायकों उस्ताद जिया मोहिउद्दीन डागर और उस्ताद जिया फरीदुद्दीन डागर के संरक्षण में शुरू हुई। उनके सुप्रसिद्ध दार्शनिक और गणितज्ञ पिता बटुक सान्याल आईआईटी मुंबई के प्रोफेसर थे जिनसे उनका मन और हृदय दर्शनशास्त्र के अकादमिक अध्ययन के प्रति प्रेरित हुआ। मुंबई विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर करने के बाद, उनके गुरु ने उन्हें गायन संगीत में स्नातकोत्तर करने के लिए बनारस हिंदू विश्वविद्यालय भेजा, वहीं उन्होंने प्रख्यात संगीतज्ञ प्रोफेसर प्रेमलता शर्मा के अधीन पीएच.डी शोध भी पूरा किया।

3. पण्डित (डॉ.) सान्याल एक प्रोफेसर थे और उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के गायन संगीत विभाग के प्रमुख और प्रदर्शन कला संकाय के डीन के रूप में भी कार्य किया। उन्होंने 37 वर्ष की अपनी अध्यापन यात्रा के दौरान हजारों छात्रों को पढ़ाया है और पीएच.डी की डिग्री के लिए 27 विद्वानों का मार्गदर्शन किया है। बड़ी संख्या में उनके शिष्य दुनिया भर में ध्रुपद, ख्याल और वाद्य संगीत की कला का पोषण कर रहे हैं। आज उनके 30 प्रमुख शिष्य उल्लेखनीय कलाकार हैं। उन्होंने तीन प्रसिद्ध पुस्तकें—ब्रिटेन से प्रकाशित 'फिलॉसफी ऑफ म्यूजिक', 'ध्रुपद: ट्रेडिशन एंड परफॉर्मेंस इन इंडियन म्यूजिक' और 'ध्रुपद पंचासिका' लिखी हैं। लंदन विश्वविद्यालय के डॉ. रिचर्ड विडेस द्वारा सह-लिखित ध्रुपद पर उनका प्रबंध ध्रुपद परंपरा और प्रस्तुति का एक उत्कृष्ट विहंगावलोकन है।

4. पण्डित (डॉ.) सान्याल ने ध्रुपद की डागर परंपरा को आत्मसात किया है और ध्रुपद गायकी, स्वर नियंत्रण और पारंपरिक और संस्थागत दोनों तरह के अभिनव शिक्षाशास्त्र की अपनी एक विशिष्ट शैली विकसित की है। उन्हें अपने गुरु उस्ताद जिया फरीदुद्दीन डागर के साथ ध्रुपद गायकी का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और उन्होंने भारत और विदेश के कई नए मंचों पर ध्रुपद को आगे बढ़ाया। उन्होंने संस्कृत छंदों, आधुनिक कविता, पश्चिमी और भारतीय वाद्ययंत्रों, संगीतवृंद और फ्यूजन को शामिल करते हुए ध्रुपद प्रस्तुति में नए आयाम भी जोड़े हैं। उन्होंने नए राग—श्रुतिवर्धिनी, दीपरंजनी, गोपिनी और नागेश तोड़ी की रचना की है। वह 'श्रुतिज्ञान' नाम से ध्रुपद संगीत रचना करते हैं। वह आकाशवाणी और दूरदर्शन के 'शीर्ष' श्रेणी कलाकार हैं और भारत और विदेश में कई एल्बम के साथ-साथ संगीत के राष्ट्रीय कार्यक्रमों, बीबीसी और अन्य अंतरराष्ट्रीय चैनलों पर अपनी प्रस्तुति दी है।

5. पण्डित (डॉ.) सान्याल को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें प्रतिष्ठित केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 2013, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 2002, उत्तर प्रदेश रत्न 2016, स्वाति तिरुनल सम्मान 1995 और ध्रुपद मेला वाराणसी 2010 द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट सम्मान शामिल हैं। वह सांस्कृतिक नीति, शिक्षा पाठ्यक्रम और सुधार पर सलाह देने वाले कई भारतीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के एक प्रतिष्ठित सदस्य हैं। वह प्रतिभावान भावी पीढ़ी को ध्रुपद ज्ञान बांटते रहते हैं।